मेरा दर्द तुम न समझ सके

खामोश रात
आँखों में ठहरा
अधूरा सा दुख
बिखरे जज़्बात
शब्दों में न ढले
मन ही रोया
सूनी राहें
कदम थम-थम कर
चलते रहे
भीड़ में भी
तन्हाई ने मुझको
घेर लिया
टूटी उम्मीद
दिल की दरारों में
सपने खोए
अनकही पीड़ा
होंठों तक आई
फिर लौट गई
तेरी नज़र
मेरे दर्द को कभी
छू न सकी
मौन सिसकी
हवा में घुलती
कहानी मेरी

डॉ अशोक, पटना, बिहार

हम माँ-बेटे का अनोखा रिश्ता

हम माँ-बेटे का रिश्ता सबसे निराला,
दोनों का प्यार होता है सबसे प्यारा।
अलग-अलग तन, पर एक सी जान,
एक-दूजे में बसती उनकी पहचान।

जब दुनिया से अनजान था मेरा वो नन्हा सा,
मैंने थामा था हाथ, दिया था सहारा सच्चा सा।
रातों की नींदें मैंने यूँ ही गंवाई,
हर आँसू पर अपनी ममता लुटाई।

चलना सिखाया, बोलना सिखाया,
हर ठोकर से उसे बचाया।
अपने दर्द को हँसकर छुपाया,
मैंने बेटे के लिए हर ग़म भुलाया।

वक्त का पहिया अब आगे बढ़ गया है,
जीवन ने एक नया मोड़ लिया है।
मै थी कभी सहारा उसका,
अब वही बेटा मेरा सहारा बनता है।

इतिहास खुद को फिर दोहराता है,
ममता का ऋण कौन चुका पाता है।
मैंने थामा था उंगली कभी उसकी,
अब बेटा मेरा हाथ थाम जाता है।

मेरी सेवा में मेरे बेटे को जो सुख मिलता है,
वो उसे हर खुशी से बढ़कर लगता है।
ये रिश्ता है प्रेम, त्याग और मान का,
हम माँ-बेटे के अटूट विश्वास का।

सच में यही है जीवन की पहचान,
दो शरीर सही, पर एक ही जान...
हम माँ-बेटे का रिश्ता सबसे निराला,
इससे सुंदर नहीं कोई उजाला।

ऊषा शुक्ला
इफ़को आँवला बरेली यूपी

अभी ना जाओ...

आखिर कब तक
बैठी रहती
शाख पर अकेले
आज वो भी
उड़ गई
उस अनंत आकाश में
जिस ओर
कुछ वर्ष पहले
साथ छोड़
प्रस्थान कर गई थी
स्वर कोकिला
संगिनी
लता जी जिन्हें
मायूसी का आलम है
स्वर साधकों में
अभी ना जाओ छोड़ कर
कहने वाली
स्वयं भी अब चली गई
लेकिन उनके गीत
मीत बनकर
हमेशा रहेंगे
संसार में
दम मारो दम
मिट जायें हम
बोलो सुबह शाम
हरे कृष्णा हरे राम...

- व्यग्र पाण्डे गंगापुर सिटी

आंखों में समुन्दर

गमों का पहाड़ टूट पड़े
ग़म के सागर में डूबता है ।
दुखी मन हो जाता है
आंखों में समुन्दर बहता है
दुखी मन को कैसे समझाए
आंखों से पानी बहता है ।
आंखों में बहते पानी को
कैसे कोई समझ सकता है ।
खुशी या गम हो आंखों से
जब भी पानी बहता है ।
आखों का रिश्ता मन से
हमेशा ही जुड़ा रहता है ।
मन जब भी खुश होता ।
आंखों में आंसू बहते है ।
दुखी हो मन तब भी आंसू
आंखों से निर्झर बहते है ।
ठंडी हवा आंखों में लग जाए ।
तब भी आंखों से आंसू बहते है
निर्झर ये आंखों के आसूं भी
अपनी अलग कहानी कहते हैं ।
आंखों से मन का रिश्ता जुडा है
सुख दुख का आंखों से रिश्ता है ।
तभी तो आंखों में निर्झर बहता है ।
मन का सुख दुख ऐसे दिखता है ।
आंखों में समुन्दर आंसू का
अचानक ही छलकता है ।
प्यार का रिश्ता दोनों का है
मन के मंदिर में बसता है ।

डा अनन्तराम चौबे अनन्त
जबलपुर

पीड़ा भूमि की

सीने को करे छेद,
जिनसे मुझे है बड़ी खेद,
मैं तटस्थ रहने की कोशिश में अब हिलने लगी हूं
पानी को छोड़ गर्त में मिलने लगी हूं।
हे मानव तुम मेरी दोहन करो ।
शोषण नहीं
सीने की छेद बढ़ रही हैं
धड़कन तेज हो रही है
मेरा शरीर रो रही है
किया है तुमने प्रकृति के साथ आघात।
हुआ मेरे साथ विश्वासघात।
कि तुम न बिगाड़ों मेरी संतुलन,
नहीं तो बिगड़ेगा संपूर्ण प्राणियों का संतुलन ,
असंतुलित प्रकृति में क्या तुम जी पाओगे।
पहले की भांति संतुलित समाज ला पाओगे ?
कौन है मेरी परवाह करने वाला।
जिसने संपूर्ण प्रकृति को जला डाला
तुम मेरी सुरक्षा नहीं कर पाओगे
नेक्सट केयर टेकर मेरी सुरक्षा कर पाएगा।
इस उहा पोह कि जिंदगी में,
कौन अच्छा और कौन बुरा
जो अच्छा था वो बुरे हो गए।
अधूरे सपने उनके पूरे हो गए।
किनसे करे हम शिकवा शिकायत
शिकायत तो अपने आप से है।
डर तो स्वयं के पाप से है ।

नारायण प्रसाद साहू
व्याख्याता
शास. उच्च. माध्य. वि. बेलौदी

तेरा मेरा प्यार देखा हूं।

यादों की दहलीज पर मैं यह क्या देखता हूं ।
छोटी-छोटी पर्चियां पर तेरा मेरा नाम सॉन्ग देखता हूं ।
ऑफिस में काम के बीच तिरछी निगाह से
वह तेरा मुझे देखना देखता हूं।
घबराकर मेरा तुझसे बात करना देखता हूं।
तेरी मासूम सी मुस्कान और
मस्तक की बिंदी देखता हूं ।
हो गया है तुझे मुझसे प्यार
यह तेरी आंखों में देखता हूं।
हमें मिलाने के लिए बिना संकोच और
लोगों की वंदना देखता हूं।
इस गंभीर भावनाओं को लेकर तेरे प्यार
पर अपना संजय देखता हूं।
आती-जाती तूफानी लहरों के बीच छोटा सा
एक अपना टापू देखता हूं।
हो जाएगी तू मेरी यह दृढ़ता से स्वयं का
स्वयं से संकल्प देखता हूं।
हिला ना पाएगा यह अंगद के पैर सामान
मेरा प्यार कोई अपने आप पर
ऐसा गुमान देखता हूं।
हो गई है तू मेरी खुशियों से भारी
अब यह कायनात देखता हूं ।

डॉ रितेश उपाध्याय

सप्त धारायें यहाँ बह रहीं विकास की

(निज देश के विकास का गौरवमय गीत)
देश हमारा जग में अनुपम, महान है
अनुपम ज्ञान यहाँ जग में गुणगान है
व्यक्ति निर्माण से जग का उत्थान
युगऋषि के यहाँ सप्त आंदोलन देते ज्ञान ॥
परिष्कृत होता व्यक्तिव स्वयं को साधने से
जीवन को नियमितता में बाँधने से
शांत मन तो बेहतर संकल्प
आत्मबोध, तत्वबोध ज्ञान से हो जीवन सफल ॥
शिक्षा से विद्या पर जोर
शालीनता हो दिलों में चऊँ ओर
सद्ज्ञान से ही मानव बनता मनुष्य
तरक्की के नये शिखर बेहतर भविष्य ॥
मानसिक, शारीरिक स्वास्थ पर हो जोर
यज्ञौपैथी,आर्युवैद ज्ञान हो हर ओर
स्वस्थ शरीर में बसे स्वस्थ मन
बेहतर स्वास्थ ही सच्चा धन ॥
स्वावलंबन भी अति जरूरी है
कौशल विकास करे यह माँग पूरी है
छोटे उद्योग बना देते आत्मनिर्भर
रोजगार ले जाता विकास पथ पर ॥
जल, जंगल भी जीवन के लिये अति जरूरी है
पर्यावरण हो स्वच्छ सभी की जिम्मेदारी है
स्वच्छता अभियान भी जीवन में जरूरी हो
वृक्ष गंगा, निर्मल गंगा हर जन की भागीदारी हो ॥
सदियों से नारी को यहाँ मिला सम्मान
पश्चिम न हो पाये हावी, अपनी पहचान
गाँव, शहर नारी का मान
नारी दुर्गा, नारी सीता शील गुणों की खान ॥
नशा, दहेज, छुआछूत और अंधविश्वास हो जायें दूर
जन - जन हो संकल्पमय प्रयास भरपूर
नेक प्रयासों से परिवर्तन निश्चित होता
विचार क्रांति का शंखनाद सारे जग में अब परिलक्षित होता॥
हम बदलेंगे युग बदलेगा विश्व धरा का आंदोलन
अविरल भारत होगा विश्व गुरु नेक काज युगऋषि का संरक्षण ॥

आदित्य अविरल, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

संघर्ष सर्वोपरि

संघर्ष की आग में जो खुद को जलाता है,
वही इंसान दुनिया में चमक पाता है।
बिना तपे निखरे नहीं कोई भी हीरा,
दर्द ही बनाता है जीवन को गहरा।
आसान राहों में नहीं मिलती पहचान,
कठिनाइयों से ही बनता है इंसान।
जब हालात तुझे हर मोड़ पर गिराएँ,
तू हिम्मत रख, खुद को फिर से उठाएँ।
ना डर तू आँधियों से, ना झुक तू तूफानों में,
जो अडिग रहा वही जीता मैदानों में।
हर हार तेरे लिए सबक बन जाएगी,
हर चोट तुझे और मजबूत बनाएगी।
संघर्ष ही सिखाता है गिरकर संभलना,
अंधेरों में भी अपना दीपक जलाना।
जो खुद से जीता वही महान कहलाया,
जिसने हार न मानी, वही इतिहास रच पाया।

...दयाराम साहू
ग्राम-डौकाबांधा (बंजारी)
जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

अपनों का कद्र

क्या खोया क्या पाया,
इस जन्म में क्या लेकर आया।
अपनी चंद सी जिंदगी में,
कितनों को उलझाया।
आगे बढ़ने की होड़ में,
कितनों को गिराया।
जीवन भर हाय हाय कर जिया,
दूसरों का छिना,अपनों को गिराया।
कैसी यह जिंदगी जो,
दूसरों का काम ना आया।
धिक्कार ऐसी जिंदगी जो,
जो अपनों का हो नहीं पाया।
जमीन में जैसे पांव रखा आसमान दिखा,
आसमानों में रहने का ख्वाब सजाया।
कभी अपने भी थे मुश्किल पथ में साथ दिए,
जब मंजिल मिली हमे उनको भी भुलाया।
अनजाने राहों में जब कभी मुलाकात हुई,
नजदीक होते हुए भी दूर नजर हटाया।
हाथ पांव जब तक सलामत रहे,
सबको ठुकरा कर किसी को याद ना आया।
जब तक सांसे चलती रहे जीवन भर,
अपना कोई नहीं ऐसा सोच दिलों में बसाया।
समय की सुइयां पलटा एक दिन,
अपना पराया मित्रता का साथ याद आया।
मुश्किल राहों में जब फंसे हुए हैं,
जीवन भर का कमाई साथ ना आया।
हाथ पांव गिरा के पड़े हैं बिस्तर में,
अपने शुभचिंतक अपना परिवार ही आया।
जीवन की मोह माया की दुनिया में,
तन में लगी ठोकर तब मन गिड़गिड़ाया।
अपनों को देखकर अंतर्मन से,
आंखों से नदियों की धारा बहाया।
सीख मिली जिंदगी के रिश्तों में,
प्यार स्नेह ममता बंधन के साथ समझाया।
बेरी कटुता खटास न रखना दिलों में,
विश्वास से बंधा बंधन का रिश्ता कभी न जुड़ पाया।
अपने बड़ों का कद्र सम्मान सदैव रखना,
जनम जन्मों तक के रिश्तों में फूल खिलाया।

नरेश कुमार दुबे
सरायपाली जिला महासमुंद
छत्तीसगढ़

मुझे फिर से उसे 'हाँ' क्यों कहना है?

मुझे फिर से उसे 'हाँ' क्यों कहना है?
यह मन के गहन चिंतन की बात है।
ऐसा क्या था जो तब न हुआ, और अब होगा?
तुम समझती तो हो...फिर क्या बताऊँ मैं—
वही सवाल बार-बार ना होगा।
बातों को समझने का दौर,
खुद को सुधारने का वक्त।
छोटी-छोटी बातों को हम यूँ ही भूल जाते हैं,
मन में अक्सर अपने ही जवाब बुन जाते हैं।
उन जवाबों की तलाश—
क्या कभी खत्म होगी?
रुक भी जाए तो क्या,
किसी मोड़ पर फिर मुलाकात होगी?
हम दोनों 'ठीक' के रास्ते पर होंगे,
हम सही होंगे, और बाकी सब गलत होंगे।
लोगों का समझाना तब व्यर्थ था क्या?
या सच में सब कुछ सही और ठीक था?
आगे एक मौका और सही, पर सोचती हूँ—
कहीं वही दोहराव फिर से तो नहीं होगा?
हम दोनों में कौन सही, कौन गलत था—
इसका फैसला आखिर कब होगा?
उससे बेहतर कोई और न होगा—
अगर मिलना होता,
तो अब तक मिल जाता वो।
वक्त का इतना लंबा इंतजार न होता,
छोटी-छोटी बातों में फिर तकरार न होती।
अकेला बिस्तर, अकेली कहानी न होती,
रोने की कोई वजह भी बाकी न होती।
एक लंबी खामोशी के बाद भी—
इतनी लंबी प्रतीक्षा की घड़ी न होती।
कुछ तो तड़प, कुछ तो बेचैनी होती,
कहानी को संवारने की फिर दोनों की कोशिश होती।
दुआएँ बेअसर सी मिलती रहीं,
काश...एक बार तो इबादत रंग लाती।

इतना सब होने के बाद भी,
अगर कहानी खत्म न होती,
तो क्या यह मेरा झुकाव ही
मेरी भूल होती?
शायद...उस पुरानी कहानी से
बेहतर,
लिखने की फिर मुझमें क्षमता न होती।

अनुपमा आर्य आगरा उत्तर प्रदेश

नवीन के दोहे

कर्म का फल
कर्म बुरे करता सदा,कोस रहा भगवान।
मिलता है फल कर्म का,सुधरा कब इंसान।।
अहंकार में चूर हो,भूल गया भगवान।
दुख के बादल छा रहे,जागा तब नादान।।
कर्म सुधारे जिंदगी, रखना इतना ध्यान।
सुन पुकार हर भक्त की,आते हैं भगवान।।
श्रद्धा अरु विश्वास से,भजता जो भगवान।
मुश्किल कोई भी रहे,मिलता उसे निदान।।
धर्म-कर्म करते रहो,जीवन हो खुशहाल।
ईश भक्ति में लीन जो,ऊँचा उसका भाल।।
स्वर्ग-नर्क दोनों यहाँ, करना नहीं घमण्ड।
जो जैसी करनी करे,मिले कर्म का दण्ड।।
कर्म हमारे साथ हैं,कहता सदा 'नवीन'।
जीवन है दिन चार का,जीना बनकर दीन।।

रामगोपाल निर्मलकर 'नवीन' धनौरा, जिला-सिवनी (म.प्र.)

अनोखा व्यक्तित्व अम्बेडकर

मिट्टी से उठकर आसमान लिख गए,
अंधेरों में भी उजाला दिखा गए।
जिन राहों पर चलना था नामुमकिन,
वो राहें खुद ही बना गए।
जन्म लिया तो जंजीरों में बंधे थे,
समाज के तानों से हर पल सधे थे,
पर हौसलों की लौ बुझी नहीं कभी,
वो तूफानों से भी आगे बढ़े थे।
गरीबी की छांव में पले-बढ़े,
पर सपनों के सूरज संग अड़े,
विद्या की प्यास ऐसी जागी,
कि विदेशों तक ज्ञान के दीप जले।
कोलंबिया की धरती से लेकर,
लंदन स्कूल के प्रांगण तक,
ज्ञान का सागर भरते गए,
हर बाधा को करते गए नष्ट।
डिग्रियों से नहीं, विचारों से बड़े,
हर पुस्तक में भविष्य गढ़े,
शिक्षा को अधिकार बनाया,
हर शोषित के जीवन में उजाले भरे।
कलम को हथियार बनाकर चले,
अन्याय के हर द्वार को खोलते चले,
'बहिष्कृत हितकारिणी' का दीप जलाकर,
समाज के हर कोने में चेतना घोलते चले।
महाड़ सत्याग्रह की हुंकार बनी,
समानता की पहचान बनी,
जल, मंदिर, मानव अधिकारों की खातिर,
हर संघर्ष में उनकी जान बनी।
संविधान के शिल्पी बनकर उभरे,
न्याय के सागर में मोती बिखेरे,
समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व का संदेश,
हर नागरिक के जीवन में उतरे।
न झुके कभी, न रुके कभी,
संघर्ष की राह में थके नहीं,
दलितों के मसीहा बनकर,
हर पीड़ा को शब्दों में ढले वही।
वो केवल एक नाम नहीं,
एक युग, एक विचार, एक पहचान हैं,
मानवता के पथप्रदर्शक बनकर,
हर दिल में आज भी महान हैं।
उनकी सोच में क्रांति थी,
उनकी वाणी में आग थी,
शिक्षा, अधिकार और स्वाभिमान की ज्योति,
हर युग में आज भी जागती है।
आंबेडकर—एक प्रेरणा, एक प्रकाश,
अन्याय के विरुद्ध अटल विश्वास,
जब भी समाज भटकेगा कहीं,
उनका विचार बनेगा
मार्गदर्शक खास।

सत्य भूषण शर्माप्रवक्ता,
ट्यूबर,उदयपुर,राजस्थान
मो.-9414934304

पुराना शहर है

यह हमारा पुराना शहर है,
जहाँ वक्त बहुत धीरे चलता है,
घंटाघरों की थमी धड़कनों में,
बीता हुआ कल यहीं पलता है।
इन तंग गलियों की साँसों में,
मिट्टी की सोंधी खुशबू रहती है,
हर मोड़ पर कोई नया किस्सा,
चुपके से आँखें नम करता है।
दीवारों का उखड़ा रंग भी देखो,
इतिहास हमारा सुनाता जाता है,
दरवाज़ों की इस खामोशी में भी,
कोई अपना हमें बुलाता रहता है।
वही पनघट, वही चौपालें, शहर की,
वही अधूरी - सी आवाज़ें हमेशा हैं,
जहाँ हँसी की तस्वीरें हमें देखती हैं
,शहर हमारा धड़कनों का कारवाँ है।

अनुराग उपाध्याय।

खामोश हो गई वह आवाज

जिसने सारी दुनियां पर अपनी
आवाज से सालों किया राज
लता की थी छोटी बहन
खामोश हो गई आज वह आवाज
आशा ताई के नाम से भी थे लोग
उनको बुलाते
हर उम्र के लोग हैं उनके गाने गाते
संगीत की दुनियां में बहुत बड़ा नाम
था उनका
अभी न जाओ छोड़ कर जैसे गाने
हैं अब याद आते
किरदार बन कर डाल देती थी गाने
में जान
लोग कभी भूल नहीं सकते उनका नाम
संगीत में दिए योगदान से ही मिला था
उनको दादा साहब फाल्के सम्मान
आशा ताई कोई ऐसे ही नहीं बन
जाता
उम्र भर मेहनत की भट्टी में है जलना
पड़ता
कैसे भूल सकता है यह जहान
उनको
जो मेहनत के दम पर है दुनियां में
नाम करता

रवींद्र कुमार शर्मा घुमारवीं
जिला बिलासपुर
हि प्र

वो भगवान हमारा है

जग लगा मानने सारा है। हमें भीम जान से प्यार है।
लिखा नया संविधान हिन्द का,वो भगवान हमारा हैं।
वो भगवान हमारा हैं,वो भगवान हमारा हैं।
लिखा नया संविधान हिन्द का,दलितों को हक दिलवाया।
छोटा बड़ा नहीं होता कोई,सबको ये था समझाया।।
शिक्षा का हक भी दिलवाया,आलोकित एक सितारा है
वो भगवान हमारा है,वो भगवान हमारा हैं।
एक लहू था एक ही ईश्वर,एक ही कौम हमारी थी।
मैं ऊँचा तू नीचा ठहरा,हो रही मारा मारी थी।
कर दिया बराबर सबको जिसने,मानवता का प्यारा है।
वो भगवान हमारा हैं, वो भगवान हमारा हैं।
बने मसीहा जो दलितों के,कभी जमीं पे आये थे ।।
दिलों जान धड़कन ठहरे,रग-रग में वही समाये थे। दुश्मन भी जिसको जीत न पाए,पर अपनों से हारा है ।
दुश्मन भी जिसको जीत न पाए,पर अपनों से हारा है।।
वो भगवान हमारा हैं,वो भगवान हमारा हैं।
धुलवाया जब चाय का प्याला,लगी जिगर में कहीं अगन।
किया बराबर सबको तुमने,दिया एक दिन यही वचन।।
छीन लिया फिर हक अपना,संविधान का मिला सहारा है।
वो भगवान हमारा हैं, वो भगवान हमारा हैं।
जग लगा मानने सारा है।हमें भीम जान से प्यार है।
लिखा नया संविधान हिन्द का,वो भगवान हमारा हैं।
वो भगवान हमारा हैं,वो भगवान हमारा हैं।

शायर देव मेहरानियाँ राजस्थानी

स्वरांजलि

आशा भोंसले, स्वर की देवी, तुम थीं अद्वितीय,
संगीत की धारा में बहती अनंत प्रीत।
तुम्हारी सांसों में बसा था हर राग, हर ताल,
चुप हो गया वो सुर, जो देता था विश्राम को ढाल।
तुमने गाया प्यार, वेदना, और उल्लास,
हर भाव को दिया तुमने अपनी आवाज़ का विकास।
बचपन से लेकर आखिरी सांस तक,
तुम हर दिल की धड़कन में बसीं, हर पल बसी एक चमक।
आज तुम नहीं, पर तुम्हारी गूंज अमर है,
हर गीत में बसी हो, हर सुर में तुम स्पष्ट हो।
आकाश छूता तुम्हारा सपना, अब चुप है ज़मीन,
श्रद्धांजलि है ये भारी मन से, हे संगीत रानी।
तुम जाओगी नहीं, बस बदल गया आलम,
सुरों का उजियारा बना तुम्हारा परम धाम।
हर ग़म में गाने वाली, हर खुशी की साथी,
आशा तुम ही रहोगी, हर युग की वो बाती।
विदा हुई स्वर साम्राज्ञी, छोड़ अमर कहानी।

अतिशा माथुर जयपुर राजस्थान

शोक से श्लोक तक

नीरव वन की छाया में, करुणा भरा वह स्वर जागा,
देख क्रौंच का टूटा जोड़ा, हृदय व्यथा से भर आया
वन के उस निःशब्द प्रहर में, साँसें भी थम-सी गईं,
प्रेम में डूबे दो जीवन थे, आँखें नम-सी हो गईं।
वेदना की उस लहर में, शब्द स्वयं ही ढल गए,
शोक के उस क्षण से ही, छंद अमर से बन गए—
मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
आँसू बनकर दर्द बहा जो, वही बना इतिहास,
दुख की उस गहराई में , छिपा सृजन का प्रकाश।
एक तीर ने तोड़ा था जो प्रेम भरा वह संसार,
उसी वेदना से जन्मा, महा ग्रंथ का फिर आधार।
वन की हर सरगम पूछे, क्यों टूटा उसका प्यार,
क्यों निर्दयता ने छीना, जीवन का अनमोल उपहार।
वह विलाप, वह तड़प, वह टूटन—शब्दों में ढलती गई,
हर धड़कन की पीड़ा जैसे, छंदों में पलती गई।
करुणा की उस ज्वाला से, शब्द को मिला आकार,
और जन्मी अमर कथा—रामायण का मिला उपहार।
शोक बना श्लोक वहाँ, संवेदना से भरा सार,
मानवता को दे गया, करुणा का अनुपम संसार।
हे मन! तू भी साथ रहो , हर प्राणी के दुःख सुख का भान,
दया ही सच्चा धर्म है, यही मानव जीवन का अमृत ज्ञान।

कमलेश झा भागलपुर बिहार
9990891378

आशा भोंसले जी (श्रद्धांजलि)

दे कर अनमोल खजाना अपने हृदय स्पर्शी सुरों का इस विश्व को,
12 अप्रैल 2026 को कहा अलविदा आशा भोंसले जी ने जग को,
अपने आत्मविश्वास और हुनर के दम पर ही किया दिलों पर राज,
जीवन में संगीत साधना से कई नायाब पुरस्कारों का पहना ताज ।
चाहे बंद हो नभ की ओर रास्ते सारे उन्हें अपने पंखों पर था यकीन,
जिंदगी को जिया भी अपनी जिद्द और कला के दम पर हाँ बेहतरीन,
आशा जी ने संगीत की विधाओं को प्रस्तुत किया अपने ही अंदाज,
बन गयी उनकी स्वर आराधना अरबों दिलों की पसंदीदा आवाज ।
ईश्वरीय अनंत कृपा उन पर जन्म हुआ था उनका संगीतज्ञ घराने में,
परवरिश संगीत ने उनकी की रूह में रचा बसा कर उसी जमाने में,
उतरी वो गायकी में दीदी लता जी के साथ घर की जिम्मेदारी लेकर,
अब तक 16,000 से भी अधिक कई भाषाओं में गाएं गीत जमकर
दिलों को आशाएं देने वाली आशा अब नहीं है हमारे बीच स्वशरीर से,
पर उनकी जादूई आवाज हमेशा के लिए अमर हुई रूहानी जमीर से,
उनके आशा रेस्टोरेंट में विदेश में खाया था मैंने भी एक बार खाना,
महसूस किया उनका अद्भुत व्यक्तित्व कैसे बना देता सबको दीवाना
प्रार्थना हैं उनकी पाक आत्मा को मिलें ईश 'आनंद' चरणों में स्थान,
ऐसे ही कुछ नेक दिल बंदों पर रब रहता हैं सदा के लिए मेहरबान,
ये नश्वर शरीर त्यागना हैं हम सबको एक न एक दिन यह तो हैं तय,
पर जो भव्य सौगात देकर होते विदा चिरकाल तक वे पूज्य अजेय

- मोनिका डागा 'आनंद ', चेन्नई

दयानंद मतवाला

आर्य समाज की विचार क्रांति का फैला नया उजाला ।
सत्यार्थ प्रकाश है ग्रंथ ऐसा, बुद्धि बदलने वाला।।
आडंबरों का हुआ खात्मा, विचार क्रांति है आई,
समाधान वैज्ञानिक पाकर, दुनिया में उमंग है छाई,
वेदों का ज्ञान है सच्चा, तम को हरने वाला ।
सत्यार्थ प्रकाश है ग्रंथ ऐसा, बुद्धि बदलने वाला।।
ऋषिवर की दिव्य चेतना, ज्ञान की ज्योति जली है,
उपदेश दिए अद्भुत, दया -धर्म की सीख मिली है,
हर भटके मनुज को राह दिखाई, ऐसा किया उजाला ।
सत्यार्थ प्रकाश है ग्रंथ ऐसा, बुद्धि बदलने वाला।।
देव दयानंद कह रहे जग से, जागें और जगाएं,
वैदिक साहित्य स्थापित करके, पढ़कर स्वयं पढ़ाएं,
सभी बुराइयों का है अब, अंत जगत से होने वाला ।
सत्यार्थ प्रकाश है ग्रंथ ऐसा, बुद्धि बदलने वाला ।।
वैदिक साहित्य सबका हित करे, ऋषिवर की प्रिय वाणी,
जिसने माना सच्चे ईश्वर को, हुई पावन गति कल्याणी,
वेदों का संदेश लेकर आया, दयानंद मतवाला ।
सत्यार्थ प्रकाश है ग्रंथ ऐसा, बुद्धि बदलने वाला।।

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
ग्राम रिहावली, डाक घर तारौली गूजर, फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश 283111

'चलो चित्र बनाएं''

सोनू,मोनू,नीता,सीता।
बैठे हो क्यों रीता-रीता।
पकड़ो रंगीन चाक,कलम।
चलो आज,चित्र बनाये हम।
बहती नदिया,हरा पहाड़।
घास,लता,वृक्ष और झाड़।
हाथी,भालू,गैंडा,मृग,शेर।
बत्तख,कोयल,मोर,बटेर।
सावन में तर-बतर एक गांव।
गली में बहते कागज के नाँव।
जाड़े का कोई रंगीन बगीचा।
चलो चित्र बनाये रहे न रीता।

जीवन चन्द्राकर 'लाल''

मिडिल स्कूल खपरी दुर्ग(छ.ग.)